मॉडल सेट-02

समय 3 घंटा 15 मिनट **पूर्णांक-100**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देशः-

(क) परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

(ख) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ग) उत्तर देते समय शब्द-सीमा का ध्यान रखें।

(घ) दाहिनी ओर अंक निर्दिष्ट किये गये हैं।

(च) प्रश्न-पत्र को ध्यान से पढ़ें। इसके लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जा रहा ह।

प्रश्न 1. (अ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दें। 6X2=12

अपने जीवन के अंतिम वर्षों में डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा की उत्कट अभिलाषा थी कि 'सिन्हा लाइब्रेरी' के प्रबंध की उपयुक्त व्यवस्था हो जाए। ट्रस्ट पहले से मौजूद था लेकिन आवश्यकता यह थो कि सरकारी उत्तरदायित्व भी स्थिर हो जाय। ऐसा मसविदा तैयार करना कि जिसमें ट्रस्ट का अस्तित्व भी न टूटे और सरकार द्वारा संस्था की देखभाल और पोषण की भी गारंटी मिल जाय, जरा टेढो खीर थी। एक दिन एक चाय पार्टी के दौरान सिन्हा साहब मेरे (जगदीशचन्द्र माथुर) पास चुपके से आकर बैठ गए। सन् 1949 की बात है। मैं एक नया शिक्षा-सचिव हुआ था लेकिन सिन्हा साहब की मौजूदगी में मेरी क्या हस्ती? इसलिए जब मेरे पास बैठे और जरा विनीत स्वर में उन्होंने सिन्हा लाइब्रेरी की दास्तान कहनी शुरू की तो मैं जरा सकपका गया। मन में सोचने लगा कि जो सिन्हा साहब मुख्यमंत्री, शिक्षामंत्री और गवर्नर तक से आदेश के स्वर में सिन्हा लाइब्रेरी जैसी उपयोगी संस्था के बारे में बातचीत कर सकते हैं, वह मुझ जैसे कल के छोकरे को क्यों सर चढ़ा रहे हैं। उस वक्त तो नहीं, किन्तु बाद में गौर करने पर दो बातें स्पष्ट हुइ। एक तो यह कि मैं भले ही समझता रहा हूँ कि मेरी लल्लो-चप्पो हो रही है, किन्तु वस्तुतः उनका विनीत स्वर उनके व्यक्तित्व के उस साधारण तथा अलक्षित और आर्द्र पहलू की आवाज थी, जो पुस्तकों तथा शसिन्हा लाइब्रेरीश के प्रति उनको भावुकता के उमड़ने पर ही मुखारित होता था।

(क) सिन्हा साहब लाइब्रेरी के लिए कैसा मसविदा तैयार करना चाहते थे?

(ख) माथुर साहब क्यों सकपका गये?

(ग) सिन्हा साहब किनके साथ और किस लिए आदेशात्मक स्वर में बात कर सकते थे?

(घ) माथुर साहब जिसे लल्ला-चप्पा समझते थे वह वास्तव में क्या था?

(च) कब और कौन नया-नया शिक्षा-सचिव हुआ था?

(छ) सिन्हा साहब की कब और क्या उत्कट अभिलाषा थी?

ब. निम्नांकित गद्यांश को पढ़ कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें। 4 X 2=8

साम्प्रदायिक दंगों में भगतजी सड़क पर नाच-नाच कर हिन्दू-मुस्लिम एकता के पद गाते थे। दानों तरफ के गुंडों को अपनी चिलम पिलाते थे। उनके मन की भड़ास सुनते और उनको भक्ति-शैली में उपदेश देते। एक बार भगतजी कहीं गायब हो गए। किसी मुसीबत में फँसे मुसलमान परिवार को किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने गये थे। हिन्दुओं ने मुसलमानों और मुसलमानों ने हिन्दुओं पर आशंका की। बड़ी भीषण तैयारियाँ हुई। तभी भगतजी प्रकट हो गये और गलियों में फूटा कनस्तर बजा-बजाकर गाते फिर "या जग अंधा मैं केहि समुझावौं।"

क. भगतजी किस प्रकार के उपदेश गुंडों को देते थे?

ख. भगतजी के गायब हो जाने का क्या कारण था?

ग. भगतजी के गायब हो जाने से समाज में क्या प्रतिक्रिया हुई?

घ. 'या जग अंधा मैं कैहि समझावौं' का तात्पर्य क्या है?

प्रश्न-2 दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में किसी एक विषय पर निबंध लिखें। 10

(अ) राजनीति और भ्रष्टाचार

संकेत बिन्दु- (क) प्राचीन स्वरूप
(ख) वर्तमान स्थिति
(ग) सत्ता लोलुपता
(घ) भ्रष्ट आचरण का बोलबाला
(च) समाधान के उपाय

(ब) मेरे प्रिय कवि

संकेत बिन्दु- (क) भूमिका
(ख) उनकी रचना का आधार
(ग) उपादेयता

(घ)उपसंहार

(स) छात्र और अनुशासन

संकेत बिन्दु- (क) भूमिका
(ख) अनुशासन का महत्त्व
(ग) अनुशासन के अभाव में उच्छृंखलता
(घ) अनुशासन का मार्गदर्शन
(च) उपसंहार

प्रश्न-3 अपने पिता के पास एक पत्र लिखिए जिसमें आपके विद्यालय में होने वाले साइकिल-वितरण समारोह का उल्लेख हो। 5

अथवा

आय प्रमाण-पत्र बनवाने के लिए अंचलाधिकारी को एक आवेदन पत्र लिखें।

प्रश्न-4 सर्वनाम के भेद सोदाहरण बताएँ । 5

अथवा

व्युत्पत्ति के आधार पर शब्दों के भेद सोदाहरण लिखें

प्रश्न-5 निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखें: 5x1=5

(1) कमल (2) आकाश(3) आँख (4)सूरज पुत्र।

प्रश्न-6 निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करें: 5x1=5

(1) चरखा काटना चाहिए।
(2) कमरा लबालब भरा था।
(3) हम चाय पिये हं।
(4) वह सारी पुस्तक पढ़ डाला।
(5) भाई-बहन आती है।

प्रश्न-7स्तम्भ 'अ' और ब का सही मिलान सामने-सामने लिखकर करें। 6x1=6

	स्तम्भ अ		**स्तम्भ ब**
क.	कहानी	1.	अम्बेदकर
ख.	निबंध	2.	नलिन विलोचन शर्मा
ग.	एक वृक्ष की हत्या	3.	महात्मा गाँधी
घ.	सात कोड़ी होता	4.	रसखान

च	प्रेम अयनि श्री राधिका	5.	कुँवर नारायण
छ	शिक्षा और संस्कृति	6.	ढहते विश्वास

निर्देशः- प्रश्न संख्या 8 से 17 तक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30 शब्दों में दें।

प्रश्न-8 लेखक क्यों पूछता है कि मनुष्य किस ओर बढ़ रहा ह। पशुता की ओर या मनुष्यता की ओर? स्पष्ट करें। 3

प्रश्न-9 बहादुर के आने से लेखक के घर और परिवार के सदस्यों पर कैसा प्रभाव पड़ा? 3

प्रश्न-10 राजनीतिक मूल्यों से साहित्य के मूल्य अधिक स्थायी कैस होते ह? 3

प्रश्न-11 बिरजू महाराज के जीवन में सबसे दुखद समय कब आया? 3

प्रश्न-12 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दें।

मेरे सभी भाई और रिश्तदार अच्छे ओहदों पर थे और उन सभी के यहाँ नौकर थे। मैं जब बहन की शादी में घर गया तो वहाँ नौकरों का सुख देखा। मेरी दोनों भाभियाँ रानी की तरह बैठकर चारपाइयाँ तोड़ती थीं, जबकि निर्मला को सेबेरे से लेकर रात तक खटना पड़ता था। मैं ईर्ष्या से जल गया। इसके बाद नौकरी पर वापस आया तो निर्मला दोनों जून 'नौकर-चाकर' की माला जपने लगी। उसकी तरह अभागिन और दुखिया स्त्री और भी कोई इस दुनिया में होगी? वे लोग दूसरे होते हैं, जिनके भाग्य में नौकर का सुख होता ह...।

(क) पाठ और लेखक के नाम लिखें 1

(ख) बहन की शादी में लेखक ने क्या देखा? इसका क्या प्रभाव पड़ा 1

(ग) इस अवतरण में किस प्रकार की भावना की अभिव्यक्ति है? 3

प्रश्न13. भारत माता अपने ही घर में प्रवासिनी क्यों बनी हुई हैं? 3

प्रश्न 14. 'हमारी नींद' कविता का संदेश क्या है।? 3

प्रश्न 15. कवि अपने को जलपात्र और मदिरा क्यों कहता ह? 3

प्रश्न 16. 'अक्षर ज्ञान' कविता किस तरह सांत्वना देती और आशा जगाती है? 3

प्रश्न 17. निम्नलिखित पद्य को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें।

सफल आज उसका तप-संयम,
पिला अहिंसा स्तन्य सुधोपम,
हराती जन मन भय, भव तम-भ्रम,

जग–जगनी जीवन विकासिनी।

क. कविता और कवि का नाम लिखें। 1

ख. कविता में किसके तप संयम के सफल होने की बात कही गई है? 1

ग. पदावतरण का भावार्थ लिखें। 3

प्रश्न 18. 'ढहत विश्वास' शीर्षक कहानी की सार्थकता पर विचार करें। 3

प्रश्न 19. गुणनिधि का संक्षिप्त परिचय दीजिए। 3

प्रश्न 20. नंजम्मा के बारे में आप क्या सोचते हैं? 4

या

नंजम्मा का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर मॉडल सेट-02

उत्तर -(अ)

(क) सिन्हा साहब लाइब्रेरी के लिए ऐसा मसविदा तैयार करना चाहते थे जिसमें ट्रस्ट का अस्तित्व भी मौजूद रहे और सरकार द्वारा संस्था की देखभाल तथा पोषण की गारंटी भी मिल जाए।

(ख) एक दिन एक चाय-पार्टी के दौरान सच्चिदानंद सिन्हा माथुर साहब के पास चुपके से आकर बैठ गए। सिन्हा साहब जैसे महान व्यक्ति को अपने पास बठा देखकर तथा उनसे लाइब्रेरी की दास्तान सुनकर माथुर साहब सकपका गये।

(ग) सिन्हा साहब मुख्यमंत्री, शिक्षा मंत्री ओर गवर्नर तक से आदेशात्मक स्वर में "सिन्हा लाइब्रेरी" जैसी उपयोगी संस्था के बारे में बातचोत कर सकते थे।

(घ) माथुर साहब जिसे लल्लो-चप्पो समझते थे, वास्तव में वह उनके व्यक्तित्व के अलक्षित आद पहलू का सूचक था जो लाइब्रेरी के प्रति उनकी भावुकता के कारण यदा-कदा मुखरित हो उठता था।

(च) जगदीशचन्द्र माथुर 1949 में नये शिक्षा-सचिव हुए थे।

(छ) सिन्हा साहब की अपने जीवन के अंतिम वर्षों में यही उत्कट अभिलाषा थी कि सिन्हा लाइब्रेरी के प्रबंध की कोई उपयुक्त व्यवस्था हो जाए।

उत्तर (ब)क. भगतजी हिन्दू-मुसलमान के उन गुडों को अपनी सूक्ति-शैली में उपदेश देते थे जो सांप्रदायिकता के नश में अपना विवक खो कर एक-दूसरे पर घातक आक्रमण करते थे।

ख. भगतजी के गायब होने का कारण यह था कि वे मुसीबत में फँसे किसी मुसलमान परिवार को किसी सुरिक्षत स्थान पर पहुँचाने गये थे।

ग. भगतजी के गायब हो जाने से हिन्दू और मुसलमान एक-दूसरे को आशंका की दृष्टि से देखने लगे। दानों समुदाय एक-दूसरे की जान के दुश्मन हो गए। भीषण संघर्ष की तैयारियाँ शुरू हो गई।

घ. भगतजी इस गीत के माध्यम से यह कहते हैं कि यह संसार विवेक-शून्य है। उसको आँख नहीं है। मैं किस-किस को समझाऊँ? समझाया तो उन्हें ही जाता है जिनके पास विवेक है।

उत्तर-3 पूज्य पिताजी, नालंदा

13 अप्रैल-2016

सादर प्रमाण।

आपका स्नेह भरा पत्र मिला। आपकी चिंता सता रही थी। जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि अब आप पूर्णत: स्वस्थ हैं।

पिताजी आपका यह जानकर प्रसन्नता होगी की सरकार की साइकिल और पोशाक वितरण याजना का लाभ अब हमारी कक्षा को भी मिलने लगा है। परसों ही हमारे विद्यालय में यह समारोह पूर्वक वितरित किया गया।

समारोह के लिए उस दिन जब मैं विद्यालय पहुँचा तो यह देखकर दंग रह गया कि चमकती हुई साइकिलें तैयार थीं। ठीक समय पर शिक्षा अधिकारी आये।

प्रधानाध्यापक महोदय ने उनका स्वागत किया। शिक्षा अधिकारी ने सरकार की योजना की जानकारी दी और एक-एक कर छात्रों के नाम पुकारे जाने लगे। छात्र जाते, पोशाक की राशि और साइकिल लेते। मेरी बारी आई तो रोमांच हो गया। अत: में हम छात्रों ने यह प्रतीज्ञा की कि पढेंगे, बढेंगे। और अशिक्षा से लड़ेंगे। अब हम सब एक साथ पोशाक पहन कर स्कूल स्कूल जाते हैं। बड़ा मजा आता है। जब आऊँगा तब विस्तार से बताऊँगा।

सभी बड़ों को प्रणाम। आपका प्यारा बेटा

आलोक

पता -

उत्तर -3 अथवा

सेवामें,

अंचलाधिकारी महोदय

पटना अंचल, पटना।

विषय :- आय प्रमाण-पत्र निर्गत करने के संबंध में।

महाशय,

मैं आपके अंचल के खाजपुरा, बैंक कॉलोनी का निवासी हूँ। मैं एक प्रतियोगी परीक्षा का प्रपत्र भरना चाहता हूँ जिसमें आय प्रमाण-पत्र को भी प्रपत्र के साथ संलग्न करना है।

अत: सविनय निवेदन है कि मुझे आय प्रमाण-पत्र देने की कृपा की जाय जिसके लिए मैं आपका आभारी रहूँगा।

सधन्यवाद। प्रार्थी

दिनांक-12-01-2017 आलोक कुमार

बैंक कॉलोनी, खाजपुरा

पटना

उत्तर-2 (अ) राजनीति और भ्रष्टाचार

राजनीति के प्राचीन और आधुनिक स्वरूप में आकाश-पाताल का अंतर है। प्राचीन काल में 'राजनीति' प्रजा के मौलिक अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त कर सांस्कृतिक उत्कर्ष की पीठिका तैयार करती थी। वस्तुत: राजनीति में जो नीति है उससे शासनतंत्र के उच्च आचरण का द्योतन होता है। प्राचीन काल में 'राजनीति' अपने नीति धर्म का पालन करती थी परन्तु आधुनिक काल में राजनीति में केवल 'राज' रह गया है और नीति का सर्वथा लोप हो गया है। यह सही कहा गया है कि राजनीति यदि अपने नीति-धर्म को रक्षा करती है तो समझ लीजिए कि किसी देश का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

आज की राजनीति नीति से रहित है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'वाणभट्ट की आत्मकथा' में लिखा है, ऐसी राजनीति भुजंग से भी अधिक कुटिल है, अधिसार से भी अधिक कुटिल है अधिसार से भी अधिक प्रखर है और विद्युत-शिखा से भी अधिक चंचल है। आधुनिक राजनीति के संबंध में महात्मा गाँधी की यह टिप्पणी सार्थक है कि "हमारे देश में राजनीति का उपयोग या तो अपने को आगे बढ़ाने को सीढ़ी के तौर पर किया जाता है और नही तो वह अवकाश के समय हमारे विनोद का साधन होती है।"

आधुनिक भारतीय राजनीति स्वार्थ वृत्ति पर अवलम्बित है। ऐसी राजनीति देश के विकास को अवरुद्ध करती है तथा जनता के सपनों की हत्या करती है। सचमुच ऐसी राजनीति राष्ट्रद्रोह से कम नहीं है। सत्तालोलुपता ने भारतीय राजनीति को विद्रूप और अस्वस्थ किया है। आदर्शों को ताक पर रख कर राजनेताओं ने राजनीति का जो स्वरूप गढ़ा है वह अत्यंत भयावह है।

राजनीति, भ्रष्टाचार का अड्डा बन गई है। आज की राजनीति में छल-कपट, धोखा, रिश्वतखोरी जमाखोरी, स्वार्थ, पक्षपात, भाई-भतीजावाद, क्षेत्रवाद, जातीयता, धनलोलुपता आदि का बोलबाला है।

राजनीतिक भ्रष्टाचार का उन्मूलन नैतिक गुणों के विकास से ही संभव है। राजनेताओं को स्वार्थपरता और संकीर्ण मानसिकता से उबरना होगा। दृढ़, इच्छाशक्ति से अवगुणों को दूर किया जा सकता है। राष्ट्रहित को लक्ष्य बनाकर राजनीति के क्षेत्र मं आने वाले सचरित्र व्यक्तियों से ही आज की विभत्स राजनीति परिवर्तित होगी। राजनीतिक भ्रष्टाचार कानूनों से नहीं आत्मा के आदेशों से ही दूर होगा।

उत्तर-2 (ब) मेरे प्रिय कवि

मेरे प्रिय कवि जयशंकर प्रसाद का जन्म 1890 में काशी के एक सम्पन्न घराने में हुआ था। उन्होंने आठवीं कक्षा तक शिक्षा पाने के बाद घर पर ही संस्कृत, उर्दू और अँगरेजी सीखी। प्रारंभ में उन्होंने ब्रजभाषा में कविताएँ लिखीं परन्तु बाद में वे खड़ी बोली में काव्य रचना करने लगे। प्रसाद 'कवि' होने के साथ-साथ गंभीर 'चिंतक' भी थे। आधुनिक होते हुए भी प्रसाद प्राचीन गौरवशाली परम्परा से जुड़े थे।

'प्रसाद' की आरंभिक रचनाएं संस्कृतिगर्भित शैली में हैं। वे प्रायः स्थूल और बर्हिमुखी हैं। पहले पहल 'झरना' में ही छायावादी काव्य प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। अपनी अनेक कविताओं में कवि ने अंतर्मुखी कल्पना द्वारा अपनी सूक्ष्म भावनाओं को व्यक्त करने का प्रयास किया है। 'आँसू' प्रसाद की प्रसिद्ध कृति है। इसके आरम्भिक छंद व्यक्तिगत वेदना से ओत-पोत हैं पर अंत के छंदों में विश्व-कल्याण की भावना व्यक्त हुई है। 'लहर' में प्रसाद की गीत-कला का उत्कृष्ट रूप दिखाई पड़ता है। इनके गीतों में वैयक्तिक भावावेश निर्वैयक्तिक होकर हृदय के तार को झंकृत कर देता है। शेरसिंह का शस्त्र समर्पण पेशोला की प्रतिध्वनि और 'प्रलय की छाया' मे ऐतिहासिक प्रसंगों को मुक्त छंद में प्रस्तुत किया गया है।

'लहर' के गीतों में कल्पना की मनोरमता, भावुकता और भाषा का प्रौढ़ परिमार्जित रूप सर्वत्र देखा जा सकता है। 'कामायनी' (1935) इनकी अंतिम शिखर कृति है। प्रसाद को शिखर कवि के रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय कामायनी को जाता है। इस महाकाव्य में कवि ने मनु, श्रद्धा और इड़ा के माध्यम से बुद्धिवाद के विरोध में हृदय-तत्व की प्रतिष्ठा की है।

प्रसाद की भाषा में लाक्षणिकता, विशेषणविपर्यय, पतीकत्व अलंकरण, प्रसाद माधुर्य गुणों का समन्वित संगीत और अनुराग के गुण हैं जिनके चलते उनकी कविताएँ मर्म पर दीर्घकालिक प्रभाव डालती हैं। भाव और भाषा के उदात्त समन्वय ने प्रसाद को महाकवि बना दिया। मुझे कवि 'प्रसाद' इसोलिए अत्यंत प्रिय हैं।

उत्तर-2 (स) छात्र और अनुशासन

अनुशासित छात्र अपने जीवन के उद्देश्य में सफत होत हैं। अनुशासित छात्र अपना हितैषी तो होता ही है, वह अपने समाज और देश का भी हितैषी होता है।

अनुशासन के अभाव में छात्र अपने उद्देश्य से भटक जाता है और अपने परिवार, समाज तथा देश के लिए शत्रु का पर्याय बन जाता है। जीवन के हर क्षेत्र में अनुशासन आवश्यक है, पर छात्र- जीवन में तो इसका महत्त्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि पूर्ण जीवन की सफल समृद्धि छात्र-जीवन की सफलता पर ही निर्भर है। अतः यह आवश्यक है कि छात्रों को अनुशासन के प्रति शुरू से ही जागृत किया जाए। अनुशासन के संबंध में कहा गया है कि यह परिवार की अग्नि है जिसमें तप कर प्रतिभा योग्यता बन जाती है। अनुशासन, व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र का प्राण है। अनुशासन को प्रकृति कठोर दिखाई पड़ती है पर वास्तविकता यह है कि उसकी कठोरता शिष्ट-स्वीकार से दयालुता में परिवर्तित हो जाती है और उससे व्यक्ति धन्य हो जाता है।

आज के छात्र ही कल के राष्ट्र-निर्माता हैं अतएव छात्रों में अनुशासन का होना आवश्यक है। समाज को बचाए रखने के लिए जरूरी है कि छात्रों को शिष्टाचार की पूर्णरूप शिक्षा दी जाय ताकि भारत का सही अर्थों में नव-निर्माण हो सके।

उत्तर-4

सर्वनाम के छः भेद हैं- (1) पुरुषवाचक (2)निश्चयवाचक (3)अनिश्चयवाचक (4) प्रश्नवाचक (5) संबंधवाचक (6) निजवाचक

(1) पुरुषवाचक सर्वनाम- (क) उत्तम पुरुष- मैं, हम, हम सब।
(ख) मध्यमपुरुष- तू, तुम, आप, आपसब।
(ग) अन्य पुरुष- वह, वे, यह, ये, आप।

(2) निश्चयवाचक सर्वनाम - यह, वह।

(3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम- कोई, कुछ, किसी आदि।

(4) प्रश्नवाचक सर्वनाम - कौन, क्या, किसने, किसे आदि।

(5) संबंधवाचक सर्वनाम - जो वह जिसे, उसे, जो सो आदि।

(6) निजवाचक सर्वनाम - अपने आप, आप ही आप, स्वयं।

उत्तर 4 अथवा

व्युत्पत्ति के आधार पर शब्दों के तीन भेद हैं-

(1) रूढ़ (2) यौगिक (3) योगरूढ़

उदाहरण-1 रूढ़ शब्द- हाथ, कान, नाक

2. यौगिक शब्द- विद्यालय, स्मृति भवन

3. योग रूढ़ शब्द- लम्बोदर, दशानन, चतुरानन।

उत्तर-5 (1) जलज, नीरज

(2) अंबर, गगन

(3) दृग, नयन

(4) दिनकर, आदित्य

(5) बेटा, सुत।

उत्तर-6

(1) चरखा चलाना चाहिए।

(2) कमरा खचाखच भरा था।

(3) हमने चाय पी है।

(4) उसने सारी पुस्तक पढ़ डाली।

(5) भाई-बहन आते हैं।

उत्तर-7

क.	2
ख.	1
ग.	5
घ.	6
च	4
छ	3

उत्तर-8 इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार दिया जा सकता है कि मनुष्य किस ओर बढ़ रहा है? अस्त्र बढ़ाने की ओर या अस्त्र काटने की ओर? सच पूछा जाय तो मनुष्य अस्त्र बढ़ाने की ओर बढ़ रहा है, यानी वह पशुता की ओर बढ़ रहा है। उसने ऐसे संहारक अस्त्रों का निर्माण किया है कि सारी दुनिया पल भर में राख का ढेर में बदल सकती है। संहारक अस्त्रों का निर्माण हमारी विनाशक प्रवृत्ति पशु की स्वाभाविक प्रवृत्ति का द्योतक है और विनाशक प्रवृत्ति है। अतः मनुष्य मनुष्यता की ओर न बढ़कर पशुता की ओर बढ़ रहा है। आज मनुष्य प्रेम के, अहिंसा के मार्ग पर नहीं चल कर हिंसा, क्रोध, द्वेष पर चल रहा है। हिंसा क्रोध द्वेष और ईर्ष्या पशुवृत्ति हैं।

उत्तर-9 बहादुर के आने से परिवार के सारे सदस्यों को खूब आराम मिल रहा था। घर भी साफ-सुथरा रहता था। प्रतिदिन पोंछा लगाने के कारण कमरे खूब साफ और चिकने रहत थे। नियम से बहादुर सबके कपड़े धोता। सभी चमाचम कपड़े पहनते। सारे काम बहादुर करता था। कोई एक खर भी न टसकाता था। किसी को मामूली -से-मामली काम करना होता, बहादुर को ही याद करता। बहादुर भी ऐसा बहादुर था कि सबकी फरमाइशें पूरी करता था। सभी रात में पहले ही सो जाते और सुबह आठ बजे के पहले नहीं उठते। बहादुर के आने से परिवार के सारे सदस्यों को गर्व की अनुभूति होती थी।

उत्तर-10 राजनीतिक मूल्य तात्कालिक और अस्थाई होते हैं क्योंकि राजनीति का ताल्लुक भौतिक जगत से होता है। परिस्थितियों के साथ इसके मूल्य में बदलाव आता है जबकि साहित्य का संबंध मनुष्य की भावनाओं से होता है और भावनाएँ सदैव तरोताजा होती हैं। यही कारण है कि राजनीतिक मूल्यों से साहित्य के मूल्य अधिक स्थाई होते हैं। आज ब्रिटिश साम्राज्य का कोई नामलेवा नहीं है। किन्तु शेक्सपीयर, मिल्टन और शेली संसार के जगमगाते सितारे हैं।

उत्तर 11 बिरजू महाराज के जीवन का सबसे दुखद प्रसंग था उनके पिता की मृत्यु। तब बिरजू महाराज नौ साल के थे। घर की हालत खस्ता थो। इतने भी पैसे नहीं थे कि उनका दसवाँ हो सके। इसके लिए बिरजू महाराज ने दो कार्यक्रम करके 500 रुपये इकट्ठे किए तब तेरहवीं हुई। पिता की मृत्यु और वैसी हालत में नाचना बिरजू महाराज के लिए एक अकल्पनीय दुखद प्रसंग था।

उत्तर 12.

क. पाठ-बहादुर लेखक- अमरकांत।

ख. अपनी बहन की शादी में जब लेखक घर गया तो वहाँ उसने नौकरों का सुख देखा। भाभियाँ बैठी रहती थीं और उनके सारे कार्य नौकर निपटाते थे जबकि लेखक की पत्नी खुद रात-दिन खटती थीं फलस्वरूप लेखक ईर्ष्या से जल उठा।

ग. प्रस्तुत अवतरण में निम्नमध्य वर्ग की हीनभावना की अभिव्यक्ति है जिससे दिखावे की भावना का उदय होता है।

उत्तर 13. प्रवासी वह होता है जो परदेश में जा कर बसता है। वहाँ उसे बहुत से अधिकार नहीं होते जो वहाँ के मूल निवासियों के होते हैं। आमतौर पर वह मान-सम्मान भी पाप्त

नहीं होता परतंत्रता के समय (जब हम अँगरेजों के गुलाम थे) यहाँ के लोगों के अधिकार भी छिन गए। विदेशी शासकों के आगे मान-सम्मान भी जाता रहा। विदेशी ही अधिक प्रभावशाली बन गये। इस प्रकार भारतमाता अपने घर में ही प्रवासिनी बन गई।

उत्तर 14. 'हमारी नोंद' कविता के माध्यम से कवि हमें बताता है कि सृष्टि अपना संघर्ष उस समय भी जारी रखती है, जब हम सोते रहते हैं। सुविधावादी अपनी सुविधा के लिए नाना प्रकार के कार्य करते हैं, यहाँ तक कि मानव को हानि पहुँचाने से, नरसंहार करने से भी बाज नहीं आते। भाग्य के नाम पर वे अपना धंधा चलाते हैं। धर्म के नाम पर संघर्ष कर लोगों को विरक्त करते हैं लेकिन कुछ लोग हैं जो नहीं झुकते। यही जीवन का विकास-सूत्र है। संघर्ष ही जीवन है।

उत्तर 15. जलपात्र में जल होता है और जल ही जीवन का आधार है। मदिरा से नशा होता है। कवि अपने को जलपात्र इसलिए कहता है कि ईश्वर की सत्ता का आधार मनुष्य ही है। अगर मनुष्य न होगा तो ईश्वर भी न होगा क्योंकि मनुष्य को ही ईश्वर की जरूरत होती है। मनुष्य ही ईश्वर को गढ़ता है। कवि अपने को ईश्वर का मदिरा इसलिए कहता है कि ईश्वर को सत्ता का आधार भी मनुष्य ही है और सत्ता एक नशा है जिसमें अपने आपको सर्वोपरि मानने का भाव आता है। यही कारण है कि मनुष्य अपने को ईश्वर का जलपात्र और मदिरा कहता है।

उत्तर 16. कवयित्री अनामिका का 'अक्षरज्ञान' कविता समसामयिक मानवबोध का संक्षिप्त मगर प्रभावशाली दस्तावेज है। कवयित्री न अक्षरज्ञान के आरंभ के बिम्ब से आरंभ कर सृष्टि विकास की कथा के आरंभ से इसे जोड़ दिया है।

कवयित्री का कथन है कि मानव-जीवन की कथा अक्षर ज्ञान की तरह शनै-शनैः स्लेट लिखने की तरह ही है। मनुष्य संसार में धीरे-धीरे अपने परिवेश से जूझता हुआ ही आगे बढ़ता ह। इसी क्रम में एक पड़ाव ऐसा आता है जहाँ उसे आगे बढ़ने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। असफलता से आनेवाले आँसू उस संघर्ष करने के लिए प्रेरित करते हैं और संघर्ष करने की यही जिद्द उसे सृष्टि-विकास की ओर बढ़ाता है। मानव-जीवन की यही प्रवृत्ति उसे आगे बढ़ाती है।

उत्तर 17. क. कविता-भारत माता। कवि- सुमित्रानंद पंत।

ख. सफल आज उसका तप संयम के द्वारा कवि बताता है कि भारत माता ने इतने दिनों जो कष्ट सहन किया (अँगरेजों की गुलामी) है, चुपचाप रहकर जो तपस्या की है उसका परिणाम आज (आजादो) निकल आया है।

ग. कविता के इस अंतिम चरण में कवि कहता है कि इतने दिनों तक पराधीनता की पीड़ा सहने, तपस्या करने के बाद भारत माता की साधना सफल हो गई है। आज अहिंसा रूपी अमृत से इसने अपने जन-मन का डर, अंधकार और भ्रम दूर कर दिया है। संसार में ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाला यह देश फिर से जीवन का विकास-संदेश देने को प्रस्तुत हो गया है।

उत्तर 18. कहानी का शीर्षक 'ढहते विश्वास' अत्यंत सार्थक है। कहानी का प्रतिपाद्य विश्वास और कर्म के द्वंद के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। जनता को विश्वास है कि जब-जब उसपर विपत्ति आती है, तब-तब उसके आराध्य देवता उसकी मदद करते हैं। परम्परा से आते हुए इस विश्वास को जनता ने स्वीकार किया है। उसने अपने विवेक से इस विश्वास की परीक्षा नहीं की है। आज जब इस भीषण बाढ़ में इस विश्वास की परीक्षा शुरू की है। तब उसे ऐसा प्रतीत हुआ है कि उसका विश्वास निरर्थक एवं जड है। माँ चण्डेश्वरी उसकी मदद नहीं करती। वे तो स्वयं आँधी और वर्षा के थपेड़ों से आक्रांत हं। जनता का यह जड़ विश्वास ढहने लगता है और वह अपने हाथों में बाँध के निर्माण के लिए कुदाल और फावड़े थाम लेती है। निष्क्रिय विश्वास के देवता से मुक्त हो कर वह अपने लिए कर्म के देवता की आराधना करती है।

उत्तर 19. गुणनिधि गाँव का नौजवान है। कटक में पढ़ता है। वह साहसी है। उसे अपने सामाजिक दायित्व का बोध है। और वह नेतृत्वगुण सम्पन्न है वह जब गाँव आता है और बाढ़ का खतरा देखता है तो स्वयंसेवक दल का गठन करता है। स्वयं सदा उनके साथ रहकर उनका उत्साह बढ़ाता है। "निठल्लों के लिए जगह भी नहीं है दुनिया में। जिस मनुष्य ने काठ-थोड़ी का पत्थर बाँधा है, वह मनुष्य अभी मरा थोड़े ही है।" खुद पैंट-शर्ट उतारकर, काँछ लगाकार, कमर कसकर, काम पर जुटा रहता है रात-दिन।

उत्तर 20. नंजम्मा कथानायिका मंगम्मा की बहू है। वह बहुत तेज-तर्रार है। अपने काम में किसी प्रकार की दखलंदाजी सहन नहीं करती। बेटे की किसी गलती पर जब उसे पीटती और सास मंगम्मा उस वक्त जब मना करती है तो वह उस पर चढ़ बैठती है।

कहती है बेटे की माँ हूँ जैसे चाहूँगी रखूँगी। वह अपने पति पर भी काबू रखती है और तर्क में सबको हराती भी है। मंगम्मा जब मखमल का जाकिट पहनती है तो व्यंग्य भी करती है और लेन-देन की बात उठने पर मंगमा के दिए गहने-जेवर ले लेने को भी कह देती है। नंजम्मा तेज-तर्रार होने के साथ-साथ लोगों की कमजोरी जानने वाली अत्यंत चतुर भी है। जब उसे मंगम्मा द्वारा रुपया-पैसा किसी ओर को दिए जाने की आशंका होती है तो अपने बेटे को मंगम्पा के पास रहने के लिए भेज देती है तथा मौका देखकर पति के साथ जाकर माफी माँग लेती है और अपने यहाँ ले आजी है। इतना ही नहीं वही धीरे-धीरे मंगम्मा का दही बेचने का धंधा भी खुद शुरू कर देती है। इस प्रकार मंगम्मा तेज तर्रार, दूरदर्शी और व्यवहारकुशल नारी है।